

# भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ( माओवादी )

## केन्द्रीय कमेटी



प्रेस विज्ञप्ति

23 सितम्बर 2010

**अपनी आजादी के लिए आंदोलन कर रहे कश्मीरियों का कत्लेआम कर रहे**

**भारतीय शासक वर्गों की दरिंदगी की निंदा करो!**

**सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा लगातार जारी हत्याओं के खिलाफ**

**तथा कश्मीरी जनता के न्यायपूर्ण आंदोलन के समर्थन में...**

**30 सितम्बर 2010 को 24 घण्टों का 'भारत बंद' सफल बनाओ!!**

कश्मीर में सरकार द्वारा लोगों की हत्याओं का सिलसिला बेलगाम जारी है। सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा लगातार जारी मनमानी हत्याओं, अत्याचारों, बिना रुके जारी कर्फ्यू आदि की अवहेलना करते हुए पूरी कश्मीर की घाटी में विरोध प्रदर्शनों का सिलसिला जारी है। 'आजादी' का नारा समूची घाटी में गूंज रहा है। 11 जून से शुरू कश्मीरी जनता के इस न्यायपूर्ण संघर्ष को कुचलने के लिए अर्ध सैनिक, सैनिक व पुलिस बलों द्वारा की जा रही गोलीबारियों में अभी तक सौ से ज्यादा लोगों की जानें गई हैं। (इनमें अत्यधिक बीस साल से कम उम्र के किशोर व नौजवान हैं।) सैकड़ों लोग घायल हुए हैं। निहत्थे, शांतिपूर्ण व न्यायपूर्ण तरीके से प्रदर्शन कर रहे कश्मीरियों पर भारत के विस्तारवादी लुटेरे शासक वर्ग, जो अपने को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बताते हैं, बेशर्मी के साथ सशस्त्र बलों को उकसाकर बेहद क्रूरता से दमन कर रहे हैं। जहां कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार, खुद को वामपंथी कहने वाली सीपीएम व सीपीआई समेत सभी शासक पार्टियां कश्मीरियों पर हो रहे इस दमनचक्र का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समर्थन कर रही हैं, वहीं हिंदू साम्प्रदायिकतावादी भाजपा सरकार को बार-बार उकसा रही है कि वह कश्मीरियों का बेहद सख्ती से दमन करे। केन्द्र सरकार द्वारा कश्मीरी जनता पर जारी हिंसा में भाग लेने वाले भारतीय शासक वर्गों का वफादार सेवक ओमर अब्दुल्ला की सरकार जनता से पूरी तरह अलग-थलग पड़कर उनकी तीखी नफरत का शिकार बन रही है। लाठीचार्ज, आंसू गैस छोड़ने के साथ-साथ हर प्रदर्शन पर गोलीबारी करना एक रिवाज सा बन गया है। इसी पृष्ठभूमि में कश्मीरी जनता, खासकर नौजवान हाथ में आए पथरों से ही इसका प्रतिरोध कर रहे हैं। इस अमानवीय दमनचक्र के विरोध में और अपनी आत्मरक्षा के लिए किया जा रहा यह प्रतिरोध पूरी तरह न्यायपूर्ण और लोकतांत्रिक है।

कश्मीरी जनता ने खुद को कभी भी भारत का हिस्सा नहीं माना। 1947 में अंग्रेजी शासकों से भारत और पाकिस्तान को मिली झूठी आजादी के पहले तक कश्मीर राजा हरिसिंह के शासन में एक स्वतंत्र देश के रूप में था। लेकिन कुटिलता में माहिर ब्रितानी साम्राज्यवादियों के पिट्टू भारतीय व पाकिस्तानी लुटेरे शासक वर्गों ने अपने हितों के मद्देनजर कश्मीर को अपने देशों में जबरन मिला लिया जोकि कश्मीरियों की इच्छाओं और आकांक्षाओं से पूरी तरह खिलाफ था। एक हिस्से पर भारतीय शासक वर्गों ने कब्जा किया तो बाकी हिस्से को पाकिस्तान ने हड़प लिया। इस तरह बेहद निंदनीय तरीके से इन्होंने कश्मीर को दो टुकड़ों में बांट दिया। उस समय कश्मीरियों के विरोध को ठण्डा करने के लिए नेहरू सरकार ने लिखित रूप से कश्मीरी जनता व संयुक्त राष्ट्र संघ से यह वादा किया था कि कश्मीर में रायशुमारी (जनमत संग्रह) कराई जाएगी और जनता अगर आजादी चाहती है तो दे दी जाएगी। नेहरू ने इस वादे को कई बार दोहराया भी था। लेकिन कुछ ही समय बाद से उन्होंने सैन्य जूतों तले कश्मीर को रौंदना शुरू किया। नेहरू से लेकर आज के सोनिया-मनमोहन तक दिल्ली में गद्दी संभालने वाली हर शासक पार्टी ने कश्मीरियों के साथ वादाखिलाफी ही की। जब भी आजादी के लिए आवाज उठी, भारतीय विस्तारवादी सरकारों ने कश्मीरियों पर दमन का ही प्रयोग किया। आंखों के सामने घट रहे इतिहास को और अपने ही किए हुए वादों को छुपाते हुए भारतीय शासक सुनियोजित तरीके से यह प्रचार करते आ रहे हैं कि 'कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है।' तबसे कश्मीरियों के दिलों में सुलगती आई आजादी की अदम्य इच्छा ने 1990 के दशक में मिलिटेंट हथियारबंद आंदोलन का रूप ले लिया। कई मिलिटेंट संगठनों ने हथियारबंद संघर्ष चलाया। उन संगठनों के राजनीतिक लक्ष्यों में कुछ फर्क होने के बावजूद उन्हें जनता का समर्थन हासिल हुआ था क्योंकि उन्होंने कश्मीरियों की राष्ट्रीय मुक्ति की आकांक्षाओं को अभिव्यक्त किया। लेकिन उस संघर्ष को कुचलने के लिए भारत के फासीवादी शासक वर्गों ने 7 लाख से ज्यादा सैनिक और अर्ध सैनिक बलों को तैनात कर समूची कश्मीर की घाटी का सैन्यीकरण किया और अभी तक 80 हजार से ज्यादा कश्मीरियों की जानें लीं। हजारों लोगों को सरकार ने लापता कर दिया। यह कहना गलत नहीं होगा कि दुनिया की किसी भी राष्ट्रीयता के संघर्ष पर किसी भी सरकार ने इतने ज्यादा समय तक, इतनी तीव्रता से, इतनी भारी संख्या में सशस्त्र बलों को उतारकर, इतने क्रूर तरीके से दमन नहीं किया। जब मिलिटेंट आंदोलन तीखे रूप से चल रहा था, तभी भारतीय

शासक वर्गों ने कई साजिशों और षड़यंत्रों को रचकर 'फूट डालो और राज करो' वाली नीति से कश्मीरी हिंदुओं और मुसलमानों के बीच झगड़ा पैदा किया। कश्मीरी जनता के जायज आंदोलन के खिलाफ कश्मीरी पंडितों को खड़ा करने की साजिशें लगातार जारी हैं। इसमें विशेषकर विस्तारवादी देशीय अंधराष्ट्रवादी कांग्रेस और हिंदू धार्मिक साम्प्रदायिकतावादी फासीवादी संघ गिरोह की भूमिका बेहद नीचतापूर्ण है। 'मिलिटेन्सी' के रूप में प्रचलित कश्मीरियों के उस संघर्ष में कुछ पाकिस्तान-अनुकूल ताकतों और इस्लामिक ताकतों के शामिल होने के बहाने भारतीय शासकों का यह प्रचार कि कश्मीरियों का राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम पूरी तरह पाकिस्तान द्वारा प्रेरित आंदोलन है तथा उनके आंदोलन का लक्ष्य भारत से अलग होकर पाकिस्तान में शामिल हो जाना है, सरासर झूठ है। कश्मीरी जनता की आकांक्षा शुरू से ही अपनी राष्ट्रीयता की आजादी रही है। यही वजह है कि कश्मीर में मिलिटेन्सी को खत्म करने के दावे भले ही भारतीय शासक करते रहें, दरअसल यह संघर्ष रुका ही नहीं। अलग-अलग मौकों पर जिस किसी भी मुद्दे को लेकर यह आंदोलन उफान पर आया हो, 'आजादी' का नारा ही उसमें प्रमुखता से उठाया जाना इसका सबसे बड़ा सबूत है। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) दृढ़तापूर्वक घोषणा करती है कि अपनी राष्ट्रीयता की आजादी के लिए तथा आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए कश्मीरी जनता द्वारा जारी आंदोलन पूरी तरह न्यायपूर्ण है और कश्मीर पर न तो भारत को न ही पाकिस्तान को कोई हक है।

### आजादी-पसंद कश्मीरी लोगो,

अपनी आजादी के लिए तथा आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए भारतीय विस्तारवादी शासक वर्गों के खिलाफ जारी आपके संघर्ष का हमारी पार्टी समर्थन करती है और तहेदिल से भाईचारा प्रकट करती है। गोलीबारियों, लाठीचार्ज, कफ़्यू, लगातार जारी तलाशी मुहिमों और अंतहीन अपमानों का मुकाबला करते हुए दृढ़ता के साथ जारी आपके संघर्ष का हमारी पार्टी भारत की समूची क्रांतिकारी, जनवादी व संघर्षरत जनता की ओर से क्रांतिकारी अभिनंदन करती है। अंधाधुंध गोलीबारियां करते हुए दर्जनों की संख्या में युवक-युवतियों का कत्लेआम करने के बावजूद भी शहीदों के शवों को कंधों पर उठाकर जनाजों में हजारों की संख्या में भाग लेते हुए 'आजादी' का नारा बुलंद करने का आपका जज़्बा और कुरबानी का जोश इतिहास में हमेशा के लिए दर्ज रहेंगे। भारतीय विस्तारवादियों के भाड़े के सशस्त्र बलों की गोलीबारियों में अपनी जानें गंवाने वाले शहीदों के परिजनों, दोस्तों और समूचे कश्मीरी कौम के प्रति हमारी पार्टी गहरी संवेदना प्रकट करती है। आज जो भारतीय शासक वर्ग आपके संघर्ष पर विघटनकारी और देशद्रोहपूर्ण आंदोलन का ठप्पा लगाकर आपको अलग-थलग करने के नापाक मंसूबे से मनमानी हिंसा का प्रयोग कर रहे हैं, वे ही आज भारत की समूची शोषित जनता, भारतीय उपमहाद्वीप के उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं और व्यापक जन समुदायों के घोर दुश्मन हैं। इसलिए, आइए, अपने साझे दुश्मनों के खिलाफ हम सब एकजुट होकर लड़ें। इस लड़ाई को और तेज करें।

### भारत के इंसफ-पसंद लोगो,

कश्मीरी जनता के जायज संघर्ष के खिलाफ भारतीय लुटेरे शासक वर्ग, खासकर कांग्रेस व भगवा आतंकी गिरोह सुनियोजित तरीके से जो भड़काऊ दुष्प्रचार कर रहे हैं, उससे प्रभावित न हों। हमारी पार्टी आप सभी से अपील करती है कि आप सच्चाई को समझते हुए न्याय के पक्ष में मजबूती से खड़े हों।

**इस मौके पर हमारी पार्टी की ठोस मांगें इस प्रकार हैं -**

- 1) कश्मीर में भारत के सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा जारी हत्याओं को फौरन रोको।
- 2) सैन्य बलों को जनता को मनमाने ढंग से मार डालने का अधिकार देने वाले फासीवादी कानून - 'सशस्त्र बलों का विशेष अधिकार कानून' (एफपीएसए) को फौरन रद्द करो।
- 3) कश्मीर से अर्ध सैनिक व सैनिक बलों को फौरन वापस लो।
- 4) कश्मीर में रायशुमारी (जनमत संग्रह) करवाकर कश्मीरी जनता को अपने भविष्य का फैसला खुद ही करने का अधिकार दो।
- 5) तमाम राजनीतिक बंदियों को फौरन रिहा करो।

आप सभी से हमारा आह्वान है कि कश्मीरी जनता पर सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा जारी हत्याकाण्डों के खिलाफ तथा कश्मीरियों के जायज संघर्ष के प्रति भाईचारा प्रकट करते हुए आप 30 सितम्बर को 24 घण्टों का 'भारत बंद' सफल बनाएं। इस 'भारत बंद' के दौरान छह राज्यों - बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, ओडिशा, आंध्रप्रदेश के साथ-साथ महाराष्ट्र के गडचिरोली, गोंदिया व चंद्रपुर जिलों तथा मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले में रेलवे, सड़कें, बैंक, सरकारी व निजी कार्यालय, उद्योग-धंधे, शिक्षा व व्यापार संस्थानों को बंद रखने व उसमें उपस्थित न होने का हम जनता से आह्वान कर रहे हैं। हालांकि हम मेडिकल आदि अत्यावश्यक सेवाओं को बंद से मुक्त रखेंगे।

*Anand*

(आनंद)

सचिव, मध्य रीजनल ब्यूरो  
केन्द्रीय कमेटी  
भाकपा (माओवादी)

*Abhay*

(अभय)

प्रवक्ता  
केन्द्रीय कमेटी  
भाकपा (माओवादी)